प्रभु खिंचे, बंधे हुए चले आयेंगे

शिष्यगण, पूज्यपाद गुरुदेव का आह्वान यथोचित विधि से कर सकें इस हेतु इस मास जिस गुरु आह्वान स्तोत्र की प्रस्तुति की जा रही है वह एक दुर्लभ स्तोत्र है। इस स्तवन का पाठ अथवा श्रवण मात्र से गुरुदेव सूक्ष्म रूप में उपस्थित होते ही हैं, यह एक अनुभवजन्य प्रमाण है अनेकोनेक साधकों व शिष्यों का। अतः इस स्तवन का पाठ अत्यंत भावविह्वलता, शुद्धता एवं विगलित कंठ से करें।

विधान - जब कभी भी इस स्तवन का पाठ करने का भाव मन में उमड़े तब शुद्ध वस्त्र धारण कर उत्तरामुख हो आसन पर बैंठे, वातावरण को धूप अगरबत्ती के द्वारा सुगंधमय कर लें तथा अपने समक्ष किसी बाजोट पर वस्त्र बिछाकर पुष्प की पंखुड़ियों को गुरुदेव के लिये आसन के रूप में स्थापित करें।

गुरु को साक्षात् तत्व स्वरूप कहा गया है। गुरु साधना की अपेक्षा अन्य कोई तपस्या की क्रिया बड़ी नहीं है। गुरु वाक्य ही मंत्र और गुरु कृपा ही मुक्ति है। हमारे प्राण, गुरु के प्राण और हमारा शरीर ही गुरु का मन्दिर है। गुरु ही प्रेम, पवित्रता, शांति और बुद्धि का प्रतीक है, जो प्यार से शिष्य के अन्दर आवरण युक्त छिपे हुए सद्गुणों और शक्तियों को प्रकाशित कर उसे बाहर निकालता है। उसी के सहारे शिष्य लक्ष्य की ओर अग्रसर होता है। गुरु त्रिकालदर्शी होता है, उनके अनन्त ज्ञान की सीमा, स्थान एवं समय से परे होती है। दैविक शक्तियां छाया की तरह सदैव उनके साथ रहती हैं, जिसके फलस्वरूप उनका विचार अचूक और निर्णय भी दृढ़ होता है। गुरु को अपने शिष्य पर आने वाले संकटों का पूर्वाभास हो जाता है और सान्निध्यता के फलस्वरूप वे शिष्य को बहुत पहले ही सावधान एवं सतर्क कर देते हैं। इस प्रकार गुरु हमारी व्यावहारिक एवं आध्यात्मिक कठिनाइयों में रक्षा तो करते ही हैं, साथ-साथ उनकी अदृश्य एवं अज्ञात शक्तियां हमारे जीवन में बुराइयों को पनपने से रोकती रहती हैं। स्वस्थ हो आ अस्वस्थ, धनी हो या निर्धन, जवान हो या वृद्ध, सुखी हो या दुःखी प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में ऐसा समय अवश्य आता है जब वह निराश होकर असंतोष का अनुभव करते हुए जीवन को शून्य समझने लगता है। गुरु ही इस शून्य को परिपूर्ण कर भर देता है।

इसलिए प्राचीन काल से ही जीवन के हर क्षेत्र में चाहे वह भौतिक हो या आध्यात्मिक, गुरु को ही सफलता का साधन माना गया है, जिसका साक्षी केवल धार्मिक एवं पौराणिक ग्रंथ ही नहीं बल्कि प्रत्येक युग का इतिहास है। *'प्रत्यक्षं किं प्रमाणं'* अर्थात् आप अगर प्रत्यक्ष देखने की लालसा रखते हैं, तो श्री गुरुदेव की मूर्ति का ध्यान कर, आंखें बन्द कर आह्वान कर सकते है।

सिद्धाश्रम प्रणीत यह स्तोत्र, मात्र एक स्तवन भर नहीं है। यह स्वयं में पूज्यवाद सद्गुरुदेव को सूक्ष्म रूप में उपस्थित कर लेने का प्राणों से किया गया एक आह्वान है, अतः पठन-पाठन पूर्व मर्यादा से किया जाना आवश्यक है।

पूर्ण सतान्यै परिपूर्ण रूपं
गुरुर्वे सतान्यं दीर्घो वदान्यम्।
आविर्वतां पूर्ण मदैव पुण्यं
गुरुर्वे शरण्यं गुरुर्वे शरण्यम्॥१॥

त्वमेव माता च... (श्लोक क्रम १६ पूरा पढ़ें)

न जानामि योगं न जानामि ध्यानं
न मंत्रं न तंत्रं योगं क्रियान्वै।
न जानामि पूर्णं न देहं न पूर्वं
गुरुर्वे शरण्यं गुरुर्वे शरण्यम्॥२॥

त्वमेव माता च...

अनाथो दरिद्रो जरा रोग युक्तो
महाक्षीण दीनः सदा जाड्य वक्त्रः।
विपत्ति प्रविष्टः सदाऽहं भजामि
गुरुर्वे शरण्यं गुरुर्वे शरण्यम्॥३॥

त्वमेव माता च...

त्वं मातृ रूपं पितृ स्वरूपं
आत्म स्वरूपं प्राण स्वरूपं।
चैतन्य रूपं देवं दिवन्त्रं
गुरुर्वे शरण्यं गुरुर्वे शरण्यम्॥४॥

त्वमेव माता च...

त्वं नाथ पूर्णं त्वं देव पूर्णं
आत्म च पूर्णं ज्ञानं च पूर्णम्।
अहं त्वां प्रपद्ये सदाऽहं भजामि
गुरुर्वे शरण्यं गुरुर्वे शरण्यम्॥५॥

त्वमेव माता च....

मम अश्रु अर्घ्यं पुष्पं प्रसूनं
देहं च पुष्पं शरण्यं त्वमेवम्।
जीवोऽ वदां पूर्ण मदैव रूपं
गुरुर्वे शरण्यं गुरुर्वे शरण्यम्॥६॥

त्वमेव माता च...

आवाहयामि आवाहयामि
शरण्यं शरण्यं सदाहं शरण्यं।
त्वं नाथ मेवं प्रपद्ये , प्रसन्नं
गुरुर्वे शरण्यं गुरुर्वे शरण्यम्॥७॥

त्वमेव माता च...

न तातो न माता न बन्धुर्न भ्राता
न पुत्रो न पुत्री न भृत्यो न भर्ता।
न जाया न वित्तं न वृत्तिर्ममेवं
गुरुर्वे शरण्यं गुरुर्वे शरण्यम्॥८॥

त्वमेव माता च...

आबध्य रूपं अश्रु प्रवाहं
धियां प्रपद्ये हृदयं वदान्ये।
देहं त्वमेवं शरण्यं त्वमेवं
गुरुर्वे शरण्यं गुरुर्वे शरण्यम्॥९॥

त्वमेव माता च...

गुरुर्वे शरण्यं गुरुर्वे शरण्यं
गुरुर्वे शरण्यं गुरुर्वे शरण्यम्।
एको हि नाथं एको ही शब्दं
गुरुर्वे शरण्यं गुरुर्वे शरण्यम्॥१०॥

त्वमेव माता च...

कान्तां न पूर्व वदान्यै वदान्यं
कोऽहं सदान्यै सदाहं वदामि।
न पूर्वं पतिर्वे पतिर्वे सदाऽहं
गुरुर्वे शरण्यं गुरुर्वे शरण्यम्॥११॥

त्वमेव माता च...

न प्राणो वदार्वे न देहं नवाऽहै
न नेत्रं न पूर्व सदाऽहं वदान्यै।
तुच्छं वदां पूर्व मदैव तुल्यं
गुरुर्वे शरण्यं गुरुर्वे शरण्यम्॥१२॥

त्वमेव माता च...

पूर्वो न पूर्व न ज्ञानं न तुल्यं
न नारि नरं वै पतिर्वे न पत्न्यम्।
को कत् कदा कुत्र कदैव तुल्यं
गुरुर्वे शरण्यं गुरुर्वे शरण्यम्॥१३॥

त्वमेव माता च...

गुरुर्वे गतान्यं गुरुर्वे शतान्यं
गुरुर्वे वदान्यं गुरुर्वे कथान्यम्।
गुरुमेव रूपं सदाऽहं भजामि
गुरुर्वे शरण्यं गुरुर्वे शरण्यम्॥१४॥

त्वमेव माता च...

आत्रं वतां अश्रु वदैव रूपं
ज्ञानं वदान्ये परिपूर्ण नित्यम्
गुरुर्वे व्रजाहं गुरुर्वे भजाहं
गुरुर्वे शरण्यं गुरुर्वे शरण्यम्॥१५॥

त्वमेव माता च...

त्वमेव माता च पिता त्वमेव
त्वमेव बंधुश्च सखा त्वमेव।
त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव
त्वमेव सर्वं मम देव देव॥१६॥

त्वमेव माता च...

सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड में व्याप्त, पूर्ण स्वरूप वाले निश्चित रूप से जो सत् चित् स्वरूप हैं, अखण्ड स्वरूप हैं, संसार में आविर्भूत होने वाले सबसे अधिक पुण्यवान् हैं, ऐसे दिव्य गुणों से परिपूर्ण गुरु चरणों की मैं शरण ग्रहण करता हूं... ॥१॥

योग क्या है, मैं नहीं जानता हूं, न मैं ध्यान को जानता हूं, न मंत्र-तंत्र आदि क्रियाओं को जान पा रहा हूं। पूर्ण शक्ति स्वरूप ब्रह्म शक्ति को भी नहीं जानता हूं। इस शरीर के पूर्व और पश्चात की गति को भी नहीं जातना हूं। केवल मैं शरणागत हूं, यही मेरी एकमात्र चेतना है... ॥२॥

मैं अनाथ और दरिद्र हूं जरा और रोग से ग्रस्त हूं, मैं बिल्कुल आश्रयहीन हूं तथा स्पष्ट रूप से बोल भी नहीं पाता हूं, निरन्तर विपत्तिग्रस्त हूं। आपकी आराधना करता हूं, हे गुरुदेव! आपकी शरणागत हूं, आप मेरी रक्षा करें... ॥३॥

हे गुरुदेव! आप ही मेरे माता, पिता, आत्मा और प्राण हैं। आप चैतन्य स्वरूप हैं, देवाधिदेव हैं। मैं सदैव आपकी शरणागतत हूं, आप मेरी रक्षा करें... ॥४॥

हे गुरुदेव! आप पूर्ण स्वरूप हैं, देव स्वरूप हैं, आत्म स्वरूप एवं ज्ञानमय हैं, चैतन्य स्वरूप एवं दिव्य चेतनामय हैं। मैं सदैव आपकी शरणागत हूं, आप मेरी रक्षा करें... ॥५॥

हे प्रभु! मेरे अश्रुओं का अर्घ्य आपको अर्पित है, यह देह ही पुष्प है, आपके शरणागत हूं। बारम्बार देह धारण करके पूर्णता प्राप्त कर सकूं, क्योंकि मैं आपके चरण शरण हूं... ॥६॥

हे प्रभु! आप मेरे हृदय में स्थापित हों, आपका आवाहन करता हूं। हे नाथ! मेरी स्थिति से आप परिचित हैं, जीवन में मैं प्रसन्नता चाहता हूं, मुझे अपनी शरण में ले लें... ॥७॥

माता, पिता, भाई तथा कोई भी सम्बन्धी इस संसार में मेरे नहीं हैं। पुत्र, पुत्री, पति तथा सेवक आदि भी नहीं हैं। धन या जीवनयापन के किसी भी साधन को मैं अपना नहीं मानता हूं। हे गुरुदेव! मैं आपके शरणागत हूं... ॥८॥

अजस्र प्रवाहमान अश्रु ही मेरे हृदय में स्थापित हैं, ये ही आपके विमल स्वरूप का प्रमाण है। यह मेरा शरीर भी आप का ही है, जिसे सेवा के लिए चाहें तो आप उपयोग करें। पुनः पुनः निवेदन है कि मैं आपकी शरण में ही रहूं... ॥९॥

मैं आपकी ही शरणागत हूं, आपके ही अधीन हूं, आप ही मेरे रक्षक हैं, पालक हैं, आप ही मेरे एकमात्र आराध्य हैं, स्तुत्य हैं। आप सदा मुझे अपनी शरण में रखे रहें, ऐसी प्रार्थना करता हूं... ॥१०॥

कोई भी वस्तु इस संसार में ऐसी नहीं है, जिसकी मुझे आपके समक्ष कामना हो। मैं कौन हूं, यह भी नहीं जानता हूं। इससे पूर्व मेरा कोई स्वामी था भी या नहीं, मैं नहीं जानता हूं। मैं तो बस जानता हूं कि आप ही मेरे सर्वस्व हैं, और आपकी शरणगति की ही कामना करता हूं... ॥११॥

यह प्राण, देह तथा नेत्र आदि इन्द्रियां जिन्हें मैं अपना समझता था - ये आनित्य और तुच्छ हैं, नाशवान हैं, संसार में केवल आप ही सारभूत तत्व हैं। प्रभु! मैं आपकी शरण में हूं... ॥१२॥

सृष्टि की उत्पत्ति से पूर्व का मुझे कुछ भी ज्ञान नहीं हैं ये नर, नारी, पत्नी और पति का भाव कैसे हुआ - यह भी नहीं जानता, मैं कौन हूं, कब से इस संसार चक्र में हूं कब तक ऐसा चलता रहेगा, यह भी नहीं जानता, केवल आपकी शरणागत हूं, यही जानता हूं... ॥१३॥

गुरु ही गति है, गुरु ही शक्ति है, गुरु ही स्तुति योग्य है, गुरु ही कथा योग्य है, गुरु ही दर्शन योग्य है, उनका ही मैं सदा स्मरण करता हूं, उन्हीं की शरणागत चाहता हूं ...॥१५॥

गुरुदेव! आप ही माता, पिता, बन्धु, सखा, विद्या और धन हैं। आपसे अलग न मेरा कोई भाव है और न मैं चाहता हूं, इसी रूप में आप पूर्णता प्रदान करें। हे प्रभु! आप ही मेरे सर्वस्व हैं, सर्वस्व हैं ...॥१६॥